मिखाइल लेर्मोंटोव
चित्र: वी. सारींव, हिंदी: अरविन्द गुप्ता
अशोक-केरीब
एक तुर्की कहानी

बहुत समय पहले, तिफ़्लिस शहर में,
एक बहुत अमीर तुर्क रहता था.

अल्लाह ने उसे बहुत सारा सोना दिया था, लेकिन उसे सोने से भी ज्यादा प्यारी उसकी इकलौती बेटी मगुल-मेगेरी थी. आकाश में तारे सुंदर होते हैं लेकिन सितारों के पीछे परियां रहती हैं, और वे और भी सुंदर होती हैं. इसी तरह मगुल-मेगेरी भी तिफ़्लिस की सभी युवतियों से अधिक सुंदर थी.

तिफ़्लिस में एक गरीब आदमी भी रहता था - अशेक-केरीब. अल्लाह ने उसे एक नेक हृदय और संगीत के उपहार के अलावा और कुछ नहीं दिया था.

वह अमीरों और रईस लोगों की शादी की दावतों में साज़ बजाता था और तुर्किस्तान के पुराने नायकों की महिमा गाता था. ऐसी ही एक दावत में उसकी नज़र मगुल-मेगेरी पर पड़ी और उन्हें एक-दूसरे से प्यार हो गया. बेचारे अशेक-केरीब को मगुल-मेगेरी का हाथ जीतने की बहुत कम उम्मीद थी. इसलिए वो सर्दियों में सिलेटी आसमान की तरह दुखी हो गया था.

एक दिन वह एक बगीचे में अंगूर की बेल के नीचे लेटा था और फिर उसे नींद आ गई. तभी मगुल-मेगेरी अपने कुछ दोस्तों के साथ वहां से गुजर रही थी.
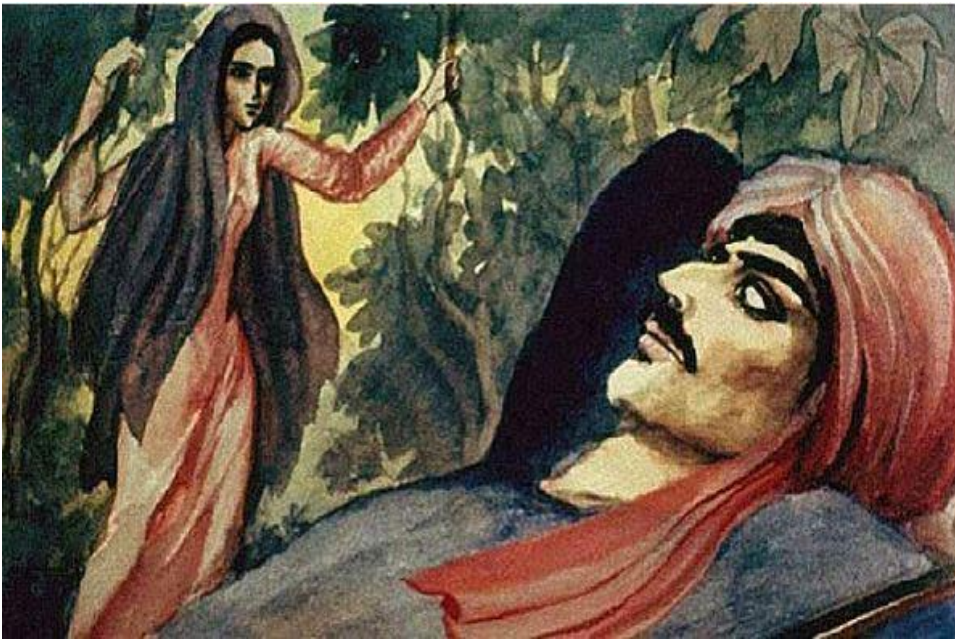
उनमें से एक लड़की सोते हुए अशेक (जिसका अर्थ केवल एक वादक, जो साज़ बजाता है) को देखकर, दूसरों से पीछे रह गई और उसके पास गई:

“तुम उस बेल के नीचे क्यों सो रहे हो?” उस लड़की ने गाया. "उठो, पागल, तुम्हारी लैला तुम्हारे पास से गुजर रही है!"
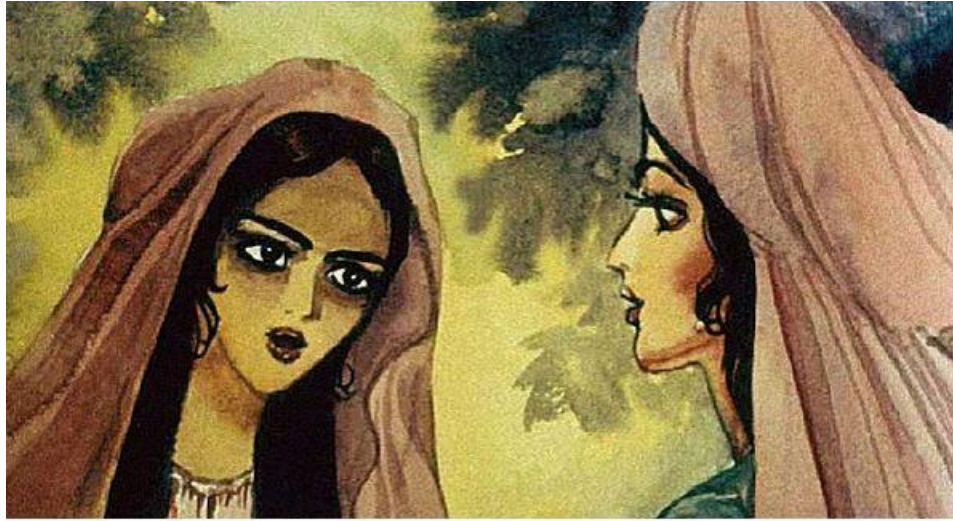
वह जाग गया लेकिन लड़की एक पक्षी की तरह फुर्ती से उड़ गई. मैगुल-मेगेरी ने उसका गाना सुना और उसे डांटना शुरू कर दिया.

“काश तुम्हें पता होता,” उसकी सहेली ने उत्तर दिया, “वह कौन था जिसके लिए मैं वो गाना गा रही थी, फिर तुमने मुझसे धन्यवाद कहा होता. वह तुम्हारा अशेक-केरीब था.”

“मुझे उसके पास ले चलो,” मगुल-मेगेरी ने कहा. और फिर वे गये.
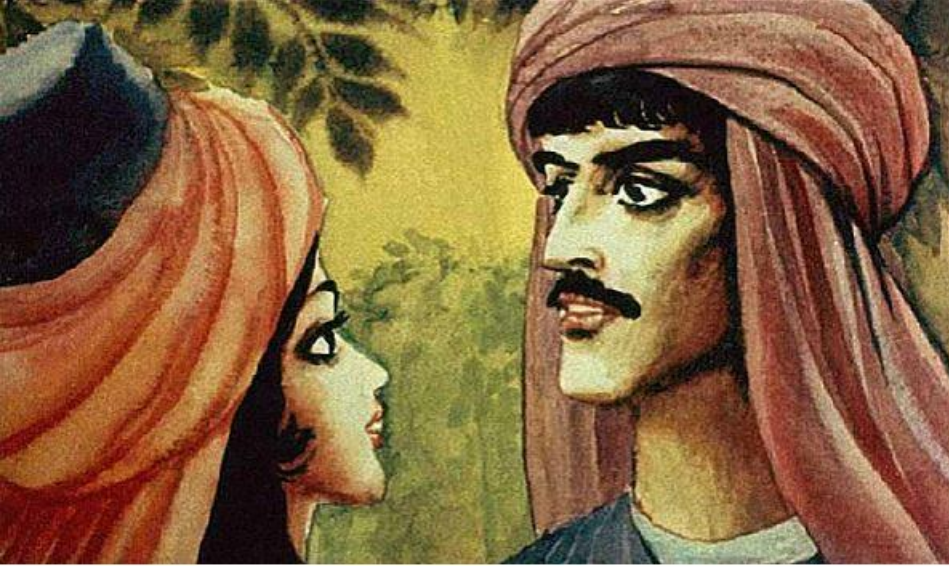
जब उसने अशेक का उदास चेहरा देखा, तो मगुल-मेगेरी ने उससे तमाम प्रश्न पूछे और उसे सांत्वना दी.

"मैं दुखी होने से कैसे बच सकता हूँ," अशेक-केरीब ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ और तुम कभी मेरी नहीं होगी."

"मेरे पिता से मेरा हाथ मांगो," मगुल-मेगेरी ने कहा, "फिर मेरे पिता हमारी शादी की दावत का खर्च अपने पैसे से करेंगे और मुझे इतना दहेज देंगे जो हम दोनों के लिए पर्याप्त होगा."

“ठीक है,” अशेक ने उत्तर दिया, “चलो मान लें कि अयाक-आगा अपनी बेटी की ख़ुशी के लिए कुछ भी खर्च नहीं छोड़ेगा. पर किसे पता कि बाद में तुम मुझ पर यह दोष न लगाओगी कि मेरे पास कुछ भी नहीं, और मैं तुम्हारा कर्ज़दार हूं. नहीं, प्रिय मगुल-मेगेरी, मैंने अपने लिए एक लक्ष तय किया है. मैं सात वर्षों तक पृथ्वी पर भटकूंगा और पैसे कमाऊंगा या फिर किसी दूर रेगिस्तान में नष्ट हो जाऊंगा. यदि तुम यह बात मान लोगी तो समय पूरा होने पर तुम मेरी हो जाओगी.”

वह सहमत हो गई, लेकिन उसने यह भी कहा कि यदि अशेक सहमत दिन पर वापस नहीं आया, तो वह कुर्शुद-बेक से शादी कर लेगी, जो लंबे समय से उसका हाथ मांग रहा था.

अशेक-केरीब अपनी माँ के पास गया. उसने अपनी यात्रा के लिए मां का आशीर्वाद लिया, अपनी छोटी बहन को चूमा, अपने कंधे पर एक बैग लटकाया, चलने के लिए अपने हाथ में एक छड़ी ली और फिर उसने तिफ़्लिस शहर छोड़ दिया.

तभी एक घुड़सवार उससे आगे निकल गया. उसने ऊपर देखा - और वो कुर्शुद-बेक था.

"तुम्हारी यात्रा अच्छी हो," कुर्शुद-बेक ने कहा, "तुम जहां भी तुम जाओगे यात्री, मैं तुम्हारा साथी बनूंगा."

अशेक इस साथी से बिल्कुल खुश नहीं था लेकिन वह उसके बारे में कुछ भी कर नहीं सकता था.
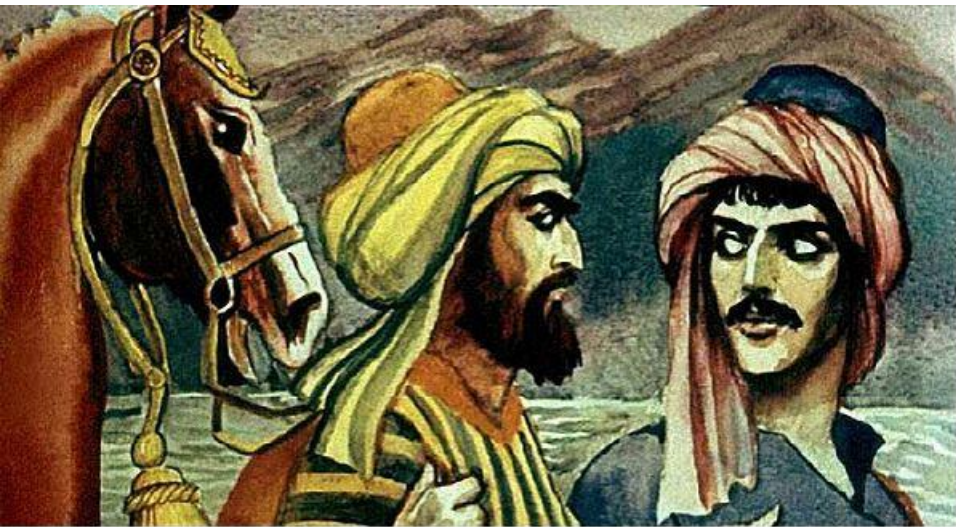
बहुत देर तक वे साथ-साथ चलते रहे, फिर उन्हें अपने सामने एक नदी दिखाई दी. वहां न तो पुल था और न ही घाट.

"तैरो," कुर्शुद-बेक ने कहा, "मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आऊंगा."

अशोक ने अपना ऊपर वाला लबादा उतार दिया और वो नदी तैर गया.
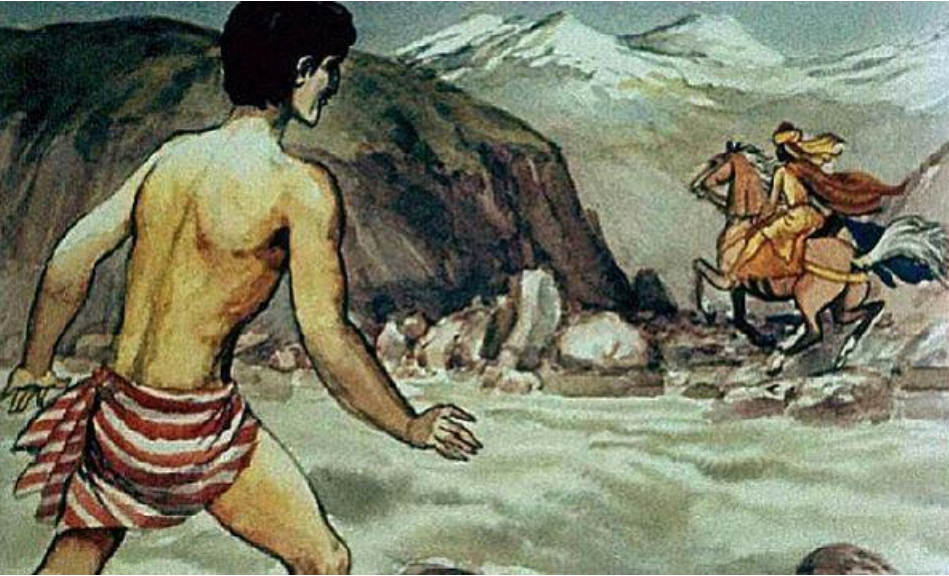
दूसरी ओर पहुँचकर उसने पीछे देखा और - कितना बड़ा दुःख! हे सर्वशक्तिमान अल्लाह! कुर्शुद-बेक, अशेक का लबादा लेकर, तिफ़्लिस की दिशा में वापस सरपट दौड़ रहा था. उसके पीछे समतल मैदान पर एक लंबी सर्पिल पगडंडी में धूल उड़ रही थी.

तिफ़्लिस पहुंचने के बाद कुर्शुद-बेक, अशेक-केरीब का लबादा उसकी बूढ़ी मां के पास लेकर गया.

"आपका बेटा गहरी नदी में डूब गया है." कुर्शुद-बेक ने कहा, "यह उसका लबादा है."

फिर माँ अपने प्यारे बेटे के कपड़ों पर गिर पड़ी और फूट-फूट कर रोने लगी.

फिर उसने वह वस्त्र लिया और उसे अपनी निर्वाचित बहू मगुल-मेगेरी के पास ले गई.

“मेरा बेटा डूब गया है,” उसने उससे कहा. “कुर्शुद-बेक उसके कपड़े वापस ले आया है. अब तुम किसी और से शादी करने को स्वतंत्र हो."

मैगुल-मेगेरी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया:

"मैं इस पर विश्वास नहीं करती हूं, यह सब उस कुर्शुद-बेक द्वारा आविष्कार किया गया है. सात साल बीतने से पहले कोई भी अन्य आदमी मेरा पति नहीं होगा."

फिर उसने अपना साज़ दीवार से नीचे उतारा और शांति से बेचारे आशिक-केरीब का पसंदीदा गाना गाने लगी.

इसी बीच एक यात्री एक गाँव में बिना कपड़ों के और नंगे पाँव पहुँचा. दयालु लोगों ने उसे कपड़े दिए और खाना खिलाया; बदले में उसने उनके लिए अद्भुत गीत गाए.
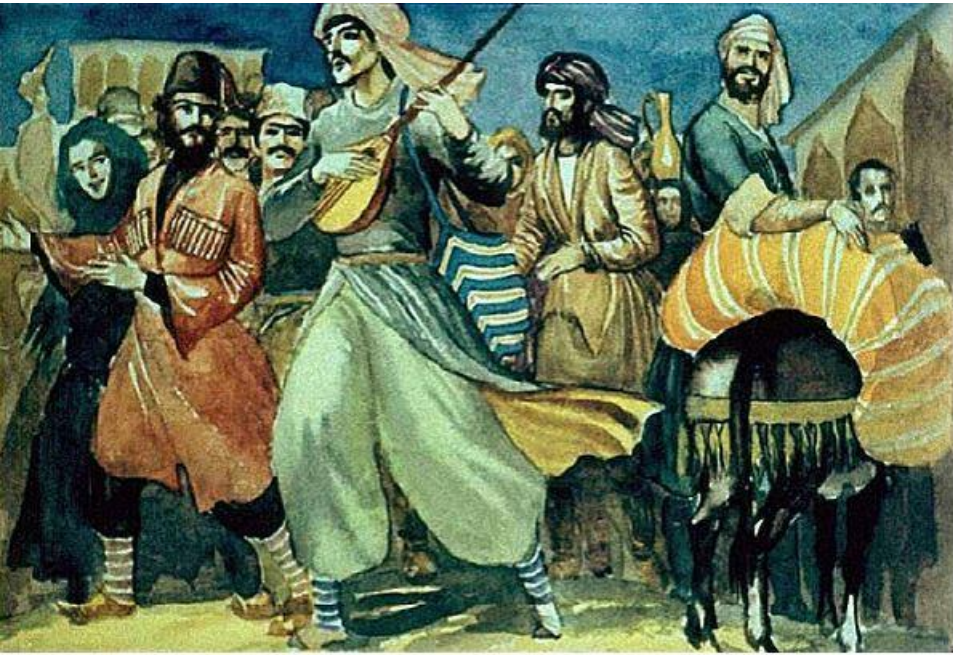
इस प्रकार अशेक-केरीब एक गाँव से दूसरे गाँव, एक शहर से दूसरे शहर घूमता रहा और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती रही और दूर-दूर तक फ़ैल गई.
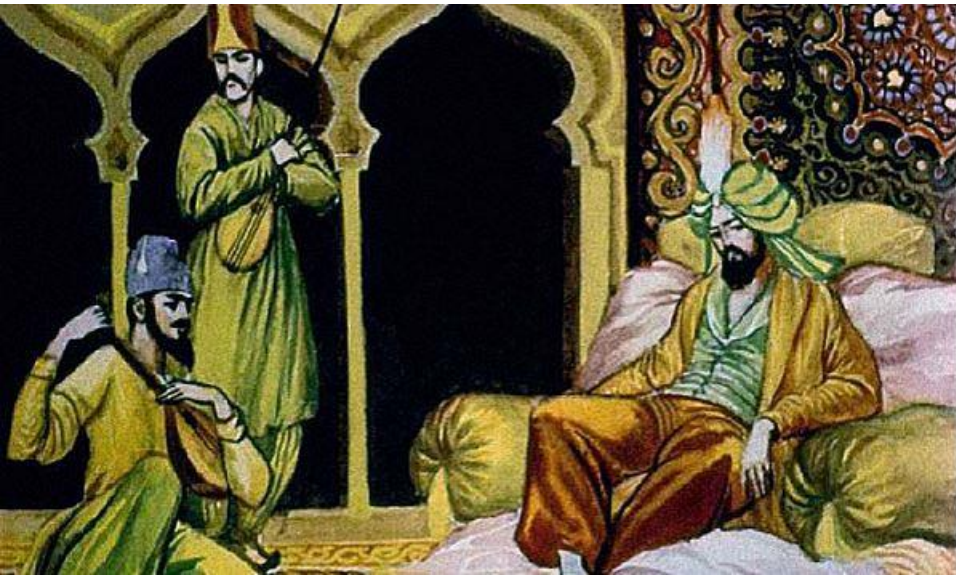
अंततः वो हलफ पहुंचा. जैसे कि उसकी आदत थी, वह सबसे पहले कॉफ़ी-हाउस में गया, उसने साज़ माँगा और गाना शुरू किया.

उस समय हलफ़ में एक पाशा रहता था, जो संगीत का बहुत बड़ा शौकीन था.

बहुत से लोगों को उसके पास लाया गया, परन्तु किसी ने भी उसे प्रसन्न नहीं किया. उसके चौशी (तुर्की सेना में कनिष्ठ पद) शहर में चारों ओर अच्छे संगीतकारों को तलाशते हुए काफी थक गए थे. अचानक, जब वे कॉफ़ी-हाउस से गुज़र रहे थे, उन्हें एक अनोखी आवाज़ सुनाई दी. वे दौड़कर अंदर पहुंचे.

"हमारे साथ ग्रेट पाशा के पास चलो," वे चिल्लाए, "नहीं तो हम तुम्हारा सिर कलम कर देंगे."

“मैं एक आज़ाद आदमी हूँ, तिफ़्लिस शहर का एक यात्री हूं,” अशेक-केरीब ने कहा, “मैं जहाँ चाहता हूँ वहाँ जाता हूँ और जहाँ नहीं जाना चाहता, वहाँ नहीं जाता हूँ. मैं तब गाता हूं जब आत्मा मुझे प्रेरित करती है और आपका पाशा मेरा कोई मालिक नहीं है."
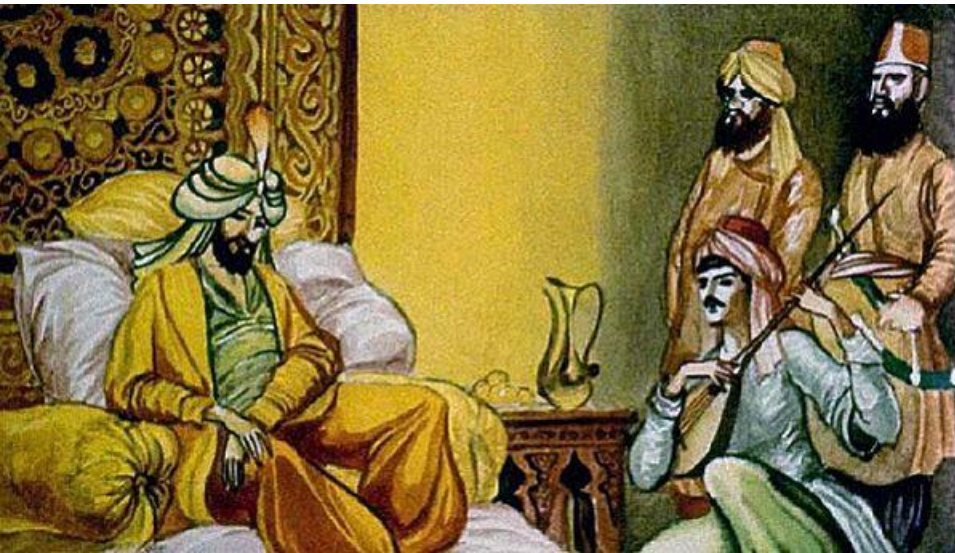
इस सबके बावजूद अशेक-केरीब को पकड़कर पाशा के पास ले जाया गया. "गाओ," पाशा ने कहा, और फिर अशेक ने अपना मुँह खोला और गाया.

और इस गीत में उसने अपनी प्रिय मगुल-मेगेरी की प्रशंसा की. उस गीत ने घमंडी पाशा को इतना प्रसन्न किया कि उसने गरीब अशेक-केरीब को अपने साथ रहने को कहा.
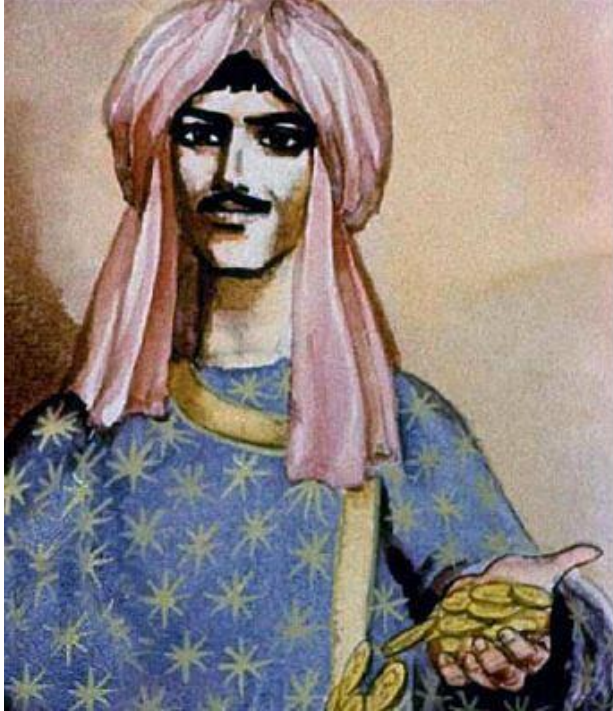
पाशा ने उस पर चाँदी और सोने की वर्षा की, और उसे महंगे-शाही वस्त्र दिए.

अशेक-केरीब का जीवन अब खुशहाल और भाग्यशाली था और वह अत्यधिक अमीर बन गया था.
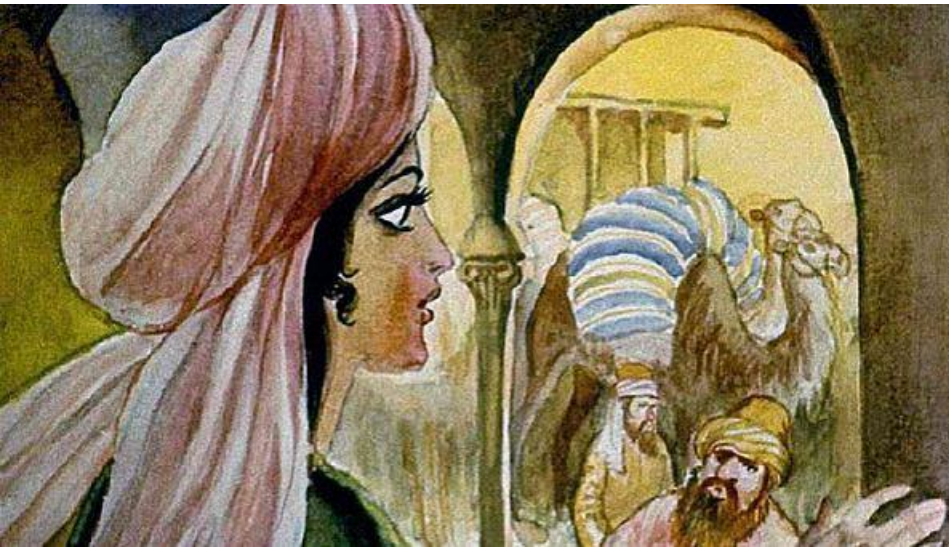
ऐसा था या नहीं कि वह अपनी मगुल-मेगेरी के बारे में सब कुछ भूल गया था. लेकिन जो समय उसने खुद के लिए निर्धारित किया था वह अब समाप्त हो रहा था और वह जाने की कोई तैयारी भी नहीं कर रहा था. सुंदर मगुल-मेगेरी निराशा में पड़ गई. उसी समय एक व्यापारी चालीस ऊँटों और अस्सी दासों के साथ तिफ़्लिस से गुजरने वाला था.

मगुल-मेगेरी ने व्यापारी को अपने पास बुलाया और उसे एक सोने का प्लेट भेंट की.

"यह उपहार ले लो," उसने कहा, "और जिस शहर में तुम जाओ, वहां अपनी दुकान पर इसे प्रदर्शित करना; तो फिर हर जगह यह घोषणा करना कि जो कोई भी मेरी इस प्लेट का स्वामित्व स्वीकार करके और अपना दावा साबित करे, वह उसे मिलेगी और साथ में प्लेट जितने सोने का वज़न भी मिलेगा.
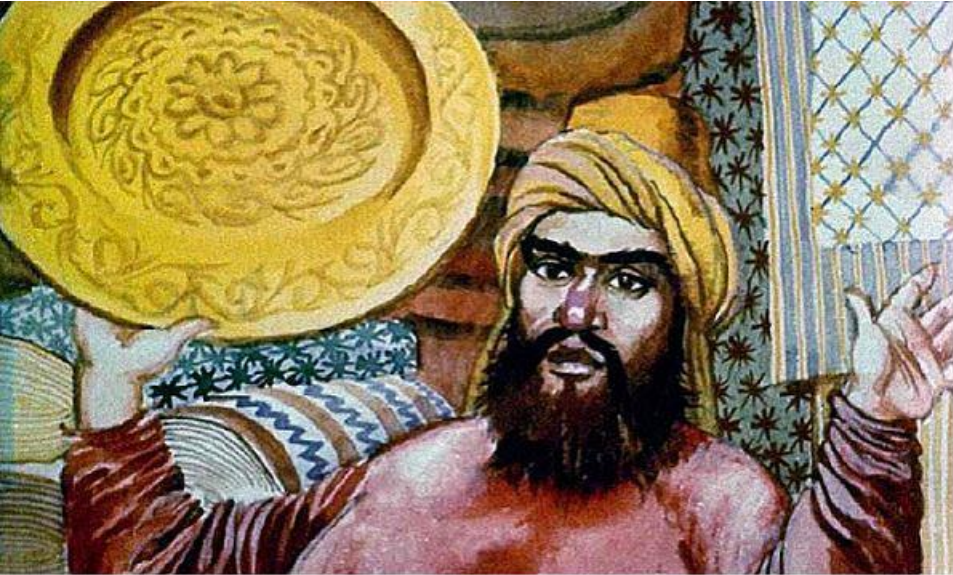
व्यापारी अपनी यात्रा पर निकल गया और जहां भी गया उसने वैसा ही किया जैसा मगुल-मेगेरी ने उससे कहा था, लेकिन किसी ने भी उस प्लेट के स्वामित्व को स्वीकार नहीं किया. जब वह हलफ में पहुंचा तब तक उसने अपना लगभग सारा सामान बेच दिया था: यहां भी उसने वही प्रचार किया जो मगुल-मेगेरी ने उसे पूरे शहर में करने का आदेश दिया था.
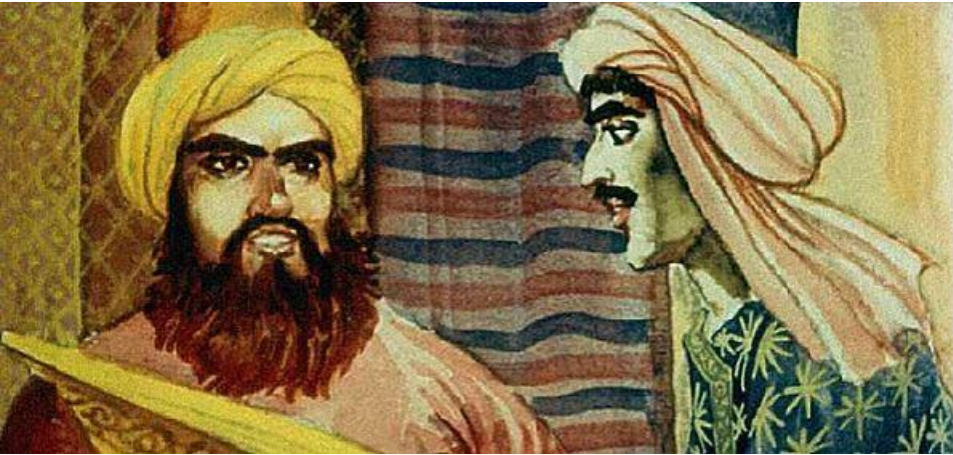
जब अशेक-केरीब ने यह सुना तो वह शीघ्र कारवां वाली सराय में पहुंचा और वहां उसने तिफ्लिस के व्यापारी की दुकान में सोने की वो प्लेट देखी.

"वो मेरी है," अशेके-केरीब ने उसे एक हाथ में पकड़ते हुए कहा.

“यह वास्तव में आपकी है,” व्यापारी ने कहा. "मैं तुम्हें पहचानता हूं, अशेक-केरीब: जितनी जल्दी हो सके तुम तिफ़्लिस जाओ: तुम्हारी मगुल-मेगेरी ने मुझे तुम्हें यह बताने के लिए कहा है कि अब समय समाप्त हो रहा है और यदि तुम निर्धारित दिन पर वहां नहीं पहुंचे तो वह दूसरी शादी कर लेगी."
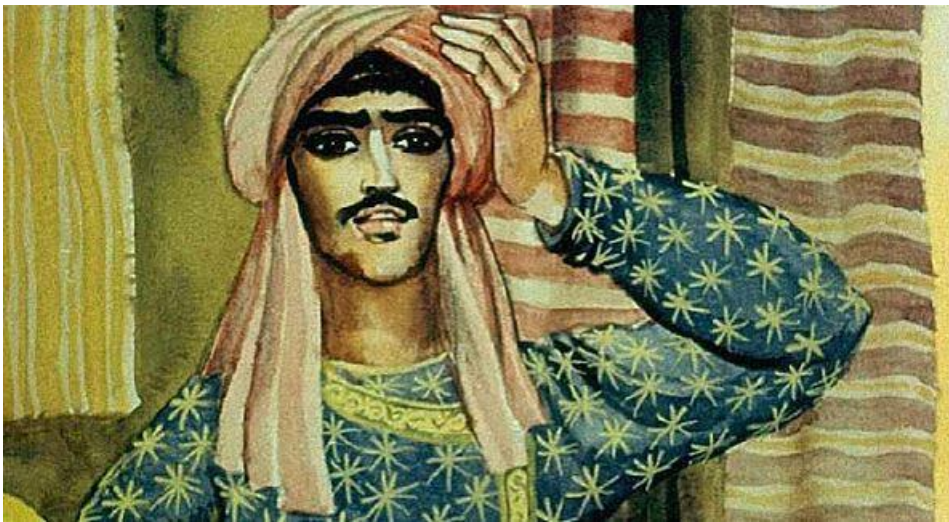
निराशा में अशेक-केरीब ने अपना सिर अपने हाथों में ले लिया: दुर्भाग्य की घड़ी आने में अब केवल तीन दिन बचे थे.

फिर भी वह अपने घोड़े पर सवार हुआ, उसने अपने साथ काफी मात्रा में सोने के सिक्के लिए और अपने घोड़े को नहीं बख्शते हुए सरपट दौड़ पड़ा.

अंत में थका हुआ घोड़ा अर्ज़िंगन पर्वत पर गिर गया, जो अर्ज़िनियन और अर्ज़ेरम के बीच में था. अब उसे क्या करना था: अर्ज़िनयान से तिफ़्लिस तक की यात्रा दो महीने की थी और केवल दो दिन ही बचे थे.

“सर्वशक्तिमान अल्लाह,” उसने रोते हुए कहा, “अगर अब तुम मेरी मदद नहीं करोगे, तो इस धरती पर मेरे लिए कुछ भी नहीं बचेगा.”
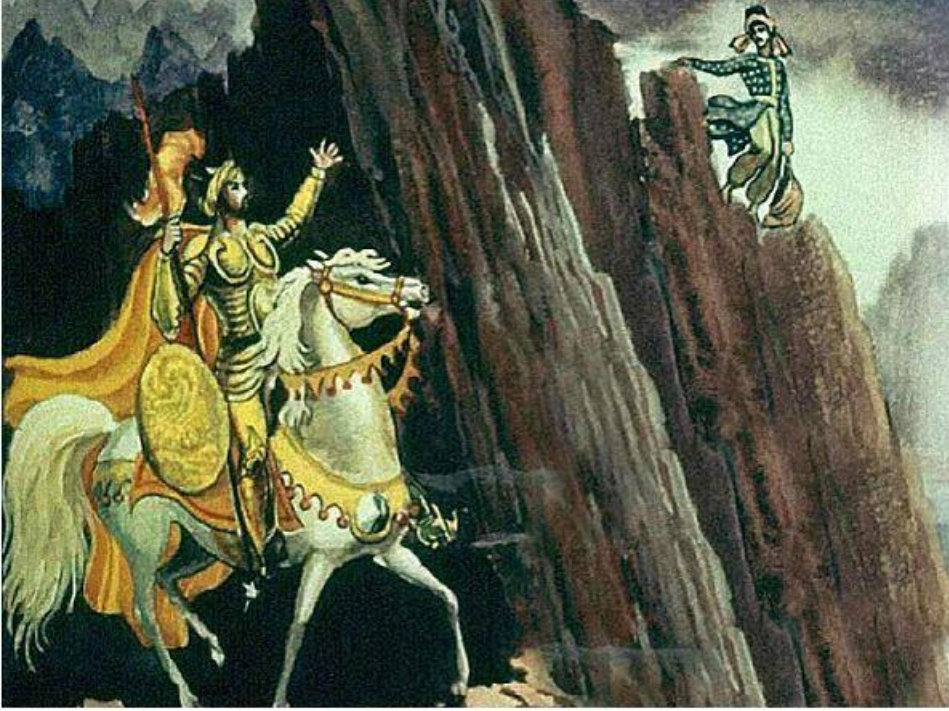
अशेक-केरीब अपने आप को एक ऊँची चट्टान से फेंक देना चाहता था; अचानक उसने चट्टान के नीचे एक सफेद घोड़े पर एक आदमी को देखा और एक गूंजती हुई चिल्लाहट सुनी:

"अरे, तुम यह क्या करने की कोशिश कर रहे हो?"

"मैं खुद को मारने की कोशिश कर रहा हूं," अशेक-केरीब ने जवाब दिया.

"अगर हालात ऐसे ही रहे तो यहाँ आओ, और मैं तुम्हें मार डालूँगा."

अशेक-केरीब नीचे उतरा.

“मेरे साथ आओ,” घुड़सवार ने धमकी देते हुए कहा.

"मैं आपके साथ कैसे चल सकता हूँ?" अशेक ने पूछा. "आपका घोड़ा हवा की तरह उड़ रहा है और मैं अपने थैले के बोझ तले दबा जा रहा हूँ."

"ठीक है, तुम अपना थैला मेरी काठी पर लटकाओ और मेरे पीछे आओ."

अशेक-केरीब ने दौड़ने की पूरी कोशिश की लेकिन फिर भी वह पिछड़ने लगे.

"तुम मेरे साथ क्यों नहीं दौड़ सकते?" घुड़सवार ने पूछा.

“मैं आपके साथ कैसे रह सकता हूँ? आपका घोड़ा बेहद तेज़ दौड़ता है और मैं पहले ही काफी थक चुका हूँ.”

"ठीक है, मेरे पीछे मेरे घोड़े पर बैठो और मुझे सच-सच बताओ कि तुम कहाँ जाना चाहते हो.”

"काश मैं आज अर्ज़ेरम तक भी पहुँच पाता," अशेक ने उत्तर दिया.

"फिर अपनी आँखें बंद करो."

अशेक ने आँखें बंद कर लीं.

“अब अपनी आँखें खोलो.”

अशेक ने आँखें खोलकर देखा. उसके सामने अरज़ेरम की सफ़ेद दीवारें और मीनारें चमक रही थीं.

"मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ, आगा," अशेक ने कहा. "मुझसे गलती हो गई. मेरे कहने का मतलब यह था कि मुझे आज कार्स में होना चाहिए था.

"तब तुम वहां हो." घुड़सवार ने उत्तर दिया, “मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी कि मुझे असली सच्चाई बताओ. अपनी आँखें फिर से बंद करो. अब उन्हें खोलो.”

अशेक को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि वह वास्तव में कार्स में था. वह अपने घुटनों पर गिर गया और उसने कहा:

“मैंने बहुत गलत व्यवहार किया है आगा. आपके नौकर अशेक ने तीन बार गलती की है. लेकिन आप खुद जानते हैं कि अगर कोई आदमी सुबह झूठ बोलने का फैसला करता है, तो वो दिन के अंत तक झूठ बोलता है: जिस स्थान पर मुझे वास्तव में जाना है वो तिफ़्लिस है.”
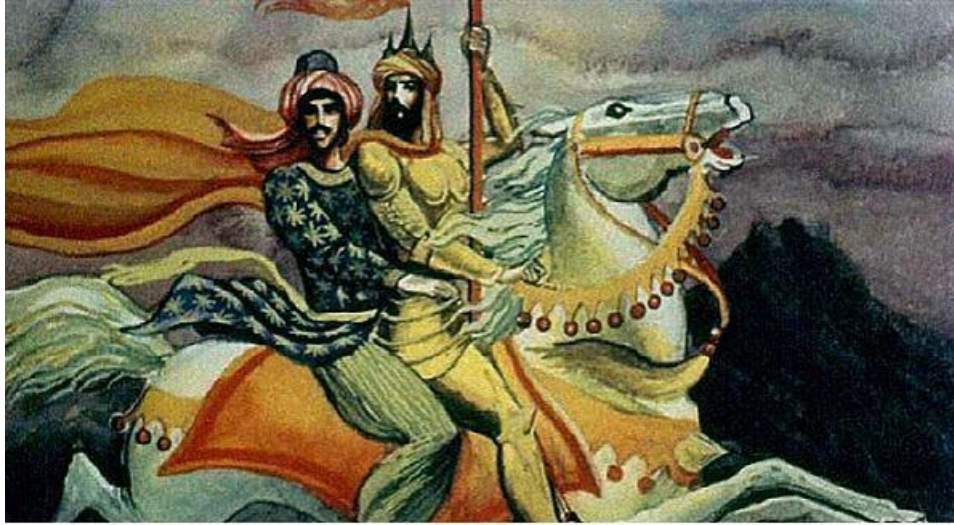
"ठीक है, तुम कम विश्वास वाले आदमी हो," घुड़सवार ने गुस्से में कहा, "हालाँकि, इसके बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता है: मैं तुम्हें माफ करता हूँ. आगे बढ़ो, अपनी आँखें बंद करो. अब उन्हें खोलो," उसने एक क्षण बाद कहा.

अशेक ख़ुशी से चिल्लाया: वो तिफ़्लिस के द्वार पर खड़ा था. उसमे सच्चे दिल से धन्यवाद दिया और अपना थैला काठी से उतारते हुए अशेक-केरीब ने घुड़सवार से कहा:

“आगा, निःसंदेह, तुमने मेरे लिए जो किया है वह बहुत बड़ा काम है; लेकिन अभी एक काम और करो; यदि मैं यहाँ लोगों को बताऊंगा कि मैं एक ही दिन में अरज़िनयान से तिफ़्लिस तक कैसे आया, तो कोई भी मुझ पर यकीन नहीं करेगा; मुझे उसका कुछ तो सबूत दो.”

उस आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा, "झुको," और मेरे घोड़े की नाल के नीचे से एक मुट्ठी मिट्टी ले लो और उसे अपने लबादे में छिपा लो. फिर यदि लोग तुम्हारी बातों पर विश्वास न करें, तो उन्हें आदेश दो कि वे एक सात साल से अंधी एक स्त्री को तुम्हारे पास लेकर आएं. उसी अवस्था में तुम उसकी आँखों पर मिट्टी मलना और वह देखने लगेगी.”

अशेक ने घोड़े के पैर के नीचे से मिट्टी उठाई, लेकिन जैसे ही उसने अपना सिर उठाया, घोड़ा और सवार दोनों गायब हो चुके थे. तब उसे अपने दिल में विश्वास हुआ कि उसका संरक्षक कोई और नहीं बल्कि हैडेरिलियाज़ (सेंट जॉर्ज) था.

देर शाम को ही अशेक-केरीब अपने घर पहुंचा: उन्होंने कांपते हाथ से दरवाजा खटखटाया और कहा:

“एना, एना (माँ), दरवाज़ा खोलो: मैं भगवान का मेहमान हूँ, ठंडा और भूखा. कृपया, अपने भटकते बेटे की खातिर मुझे अंदर आने दो."

बुढ़िया ने कमज़ोर आवाज़ में उत्तर दिया:

“यात्रियों को आश्रय देने के लिए वहां अमीरों और शक्तिशाली लोगों के घर हैं. और शहर में शादी का जश्न भी मनाया जा रहा है - बेहतर होगा कि तुम वहां जाओ. तुम्हें वहां पूरी रात आनंद से बिताने का मौका मिलेगा.”

"एना," उसने उत्तर दिया, "मैं यहां किसी को नहीं जानता और इसलिए मैं आपसे फिर विनती करता हूं: अपने भटकते बेटे की खातिर, मुझे अंदर आने दो."

तब उसकी बहन ने अपनी माँ से कहा:

"माँ, मैं उठकर उसके लिए दरवाज़ा खोलूँगी."

“बेकार लड़की,” बुढ़िया ने उत्तर दिया; "तुम्हें जवान मर्दों को अपने साथ अंदर लाने और उन्हें मांस और पेय देने में खुशी होती है क्योंकि अब इस बात को सात साल हो गए हैं जब बहुत रोने के कारण मैंने अपनी दृष्टि खो दी थी."

हालाँकि, उसकी बेटी ने, अपनी मां की बात पर ध्यान न देते हुए, दरवाज़ा खोला और अशेक-केरीब को अंदर आने दिया. अभिवादन करने के बाद, वह बैठ गया और छिपी हुई चिंता के साथ अपने चारों ओर देखने लगा. और दीवार पर उसने अपने साज़ को धूल भरे आवरण में लटका हुआ है. उसने अपनी माँ से पूछा:

"तुम्हारी दीवार पर वह क्या लटका हुआ है?"

"तुम बहुत उत्सुक हो, अतिथि," माँ ने उत्तर दिया. "क्या तुम्हारे लिए इतना काफी नहीं है कि हम तुम्हें रोटी दें और कल तुम हमारे आशीर्वाद के साथ अपने रास्ते पर चले जाओ."

"मैंने आपको पहले ही बता दिया है," अशेक-केरीब ने तर्क दिया, "कि आप मेरी अपनी माँ हैं और यह मेरी बहन है और इस कारण से मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे समझाएँ कि आपने वहाँ दीवार पर क्या लटकाकर रखा है."
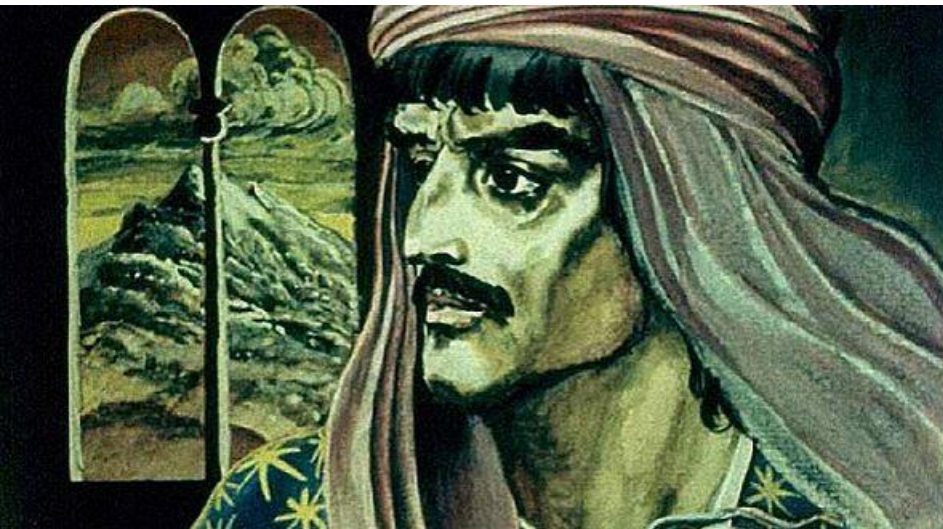
“यह एक साज़ है, एक साज़ है,” बुढ़िया ने उसके कहे एक भी शब्द पर विश्वास न करते हुए, टेढ़ेपन से उत्तर दिया.

"और 'साज़' का क्या मतलब होता है?"

"साज़ का अर्थ होता है बजाने और गाने गाने की चीज़."

अशेक-केरीब ने उससे विनती की कि वह उसकी बहन को दीवार से साज़ उतारने और उसे दिखाने की अनुमति दे.

"नहीं," बुढ़िया ने कहा. "यह मेरे दुखी बेटे का साज़ है और यह सात साल से दीवार पर लटका हुआ है जहां किसी जीवित हाथ ने उसे नहीं छुआ है."

परन्तु उसकी बहन पहले ही उठ चुकी थी. उसने साज़ को दीवार पर से उतारकर उसे दे दिया: तब उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाकर यह प्रार्थना की:

“हे, सर्वशक्तिमान अल्लाह! यदि मुझे अपना लक्ष्य प्राप्त करना है, तो मेरी सात-तार वाले साज़ को उस दिन की तरह पूरी तरह से ट्यून कर दो जैसे मैंने उसे आखिरी बार बजाया था.

और उसने तांबे के तारों को झंकारा और तारों ने पूर्ण सामंजस्य में उत्तर दिया: और उसने गाना शुरू किया: “मैं गरीब केरीब (भिखारी) हूं, और मेरे शब्द भी गरीब हैं; लेकिन महान हैडेरिलियाज़ ने मुझे ऊंची चट्टान से नीचे उतरने में मदद की, हालांकि मैं गरीब हूं और मेरे शब्द भी गरीब हैं. मुझे पहचानो माँ, अपने बेटे को पहचानो.”

जिस पर उसकी माँ फूट-फूट कर रोने लगी और पूछा:

"तुम्हारा क्या नाम है?"

“रशीद (बहादुर),” उसने उत्तर दिया.

“एक बार तुम बोल चुके हो, रशीद, पर इस बार तुम मेरी बात सुनो,” उसने कहा. “तुम्हारे शब्दों ने मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं. आज रात को मैंने नींद में देखा, कि मेरे सिर के बाल सफेद हो गए हैं, और बहुत रोने-धोने के कारण अब सात वर्ष हो गए हैं, और मेरी दृष्टि जाती रही है. मुझे बताओ, कि मेरा बेटा मेरे पास कब वापस आएगा?"

और दो बार उसने आंसुओं के साथ अपना वही प्रश्न दोहराया. व्यर्थ में उसने उससे कहा कि वह उसका बेटा था, उसने उस पर विश्वास नहीं किया और थोड़ी देर बाद उसने पूछा:

“माँ, मुझे साज़ लेकर जाने की इजाज़त दे दो. मैंने सुना है कि यहीं पास में एक शादी है: मेरी बहन मुझे रास्ता दिखाएगी; मैं बजाऊंगा और गाऊंगा, और जो कुछ भी मुझे मिलेगा मैं यहां वापस लाऊंगा और आपके साथ साझा करूंगा.

"नहीं," बुढ़िया ने कहा, "जब से मेरा बेटा गया है, उसका साज़ एक बार भी इस घर से बाहर नहीं गया है."

लेकिन उसने वादा किया कि वह साज़ के एक भी तार को नुकसान नहीं पहुंचाएगा.

“और यदि एक भी तार टूट गया,” अशेक ने आगे कहा, “तो मैं अपनी सारी संपत्ति तुम्हें दे दूंगा.”

बुढ़िया ने उसके थैलों को टटोला और यह जानकर कि वे सिक्कों से भरे हुए हैं, उसने उसे जाने दिया. उसके पास एक अमीर घर में जहाँ शादी का शोर-शराबा चल रहा था, उसकी बहन दरवाज़े पर खड़ी होकर इंतज़ार करने लगी कि आगे क्या होगा.
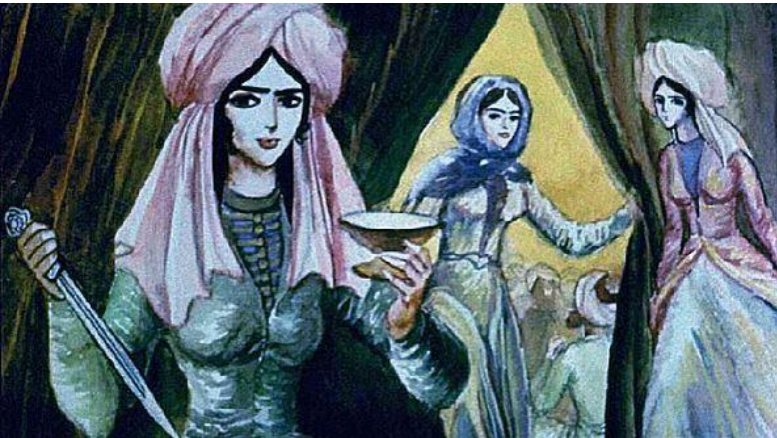
उस घर में मगुल-मेगेरी रहती थी, और उसी रात वह कुर्शुद-बेक की पत्नी बनने वाली थी. कुर्शुद-बेक अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ दावत कर रहा था, लेकिन मगुल-मेगेरी, अपने दोस्तों के साथ एक पर्दे के पीछे बैठी थी. उसके एक हाथ में जहर का प्याला और दूसरे में एक तेज खंजर था. उसने कुर्शुद-बेक के साथ तकिए पर अपना सिर रखने के बजाए मरने की कसम खाई थी.

परदे के पीछे से उसने सुना कि एक अजनबी आया है, जिसने कहा:

"सलाम अलेकुम! आप यहां मौज-मस्ती कर रहे हैं और दावत कर रहे हैं, इसलिए मुझे, एक गरीब घुमक्कड़ को, अपने बीच बैठने की अनुमति दें और मैं आपके लिए एक गीत गाऊंगा."

"क्यों नहीं?" कुर्शुद-बेक ने कहा. “सभी गायकों और नर्तकों के लिए दरवाजे खुले हैं, क्योंकि हम एक शादी का जश्न मना रहे हैं. हमारे लिए कुछ गाओ, वादक मैं तुम्हें पूरी मुट्ठी सोने के साथ वापिस भेजूंगा. तब कुर्शुद-बेक ने उससे पूछा: "और तुम्हारा नाम क्या है, यात्री?"

"शिन डि-ग्योरर्सेज़ (आपको जल्द ही पता चल जाएगा)."

"यह एक अजीब नाम है," कुर्शुद-बेक ने हँसते हुए कहा. "मैंने यह नाम पहली बार सुना है!"

“जब मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया और मेरे जन्म के समय कष्ट सहने लगी, तब बहुत से पड़ोसी दरवाज़ों पर आकर पूछने लगे कि भगवान ने उसे लड़का दिया है या लड़की; उन्हें उत्तर दिया गया: 'शिंदी-ग्योरर्सेज़ (आपको जल्द ही पता चल जाएगा).' और इसीलिए - जब मैं अंततः पैदा हुआ - तो मुझे यह नाम दिया गया.”
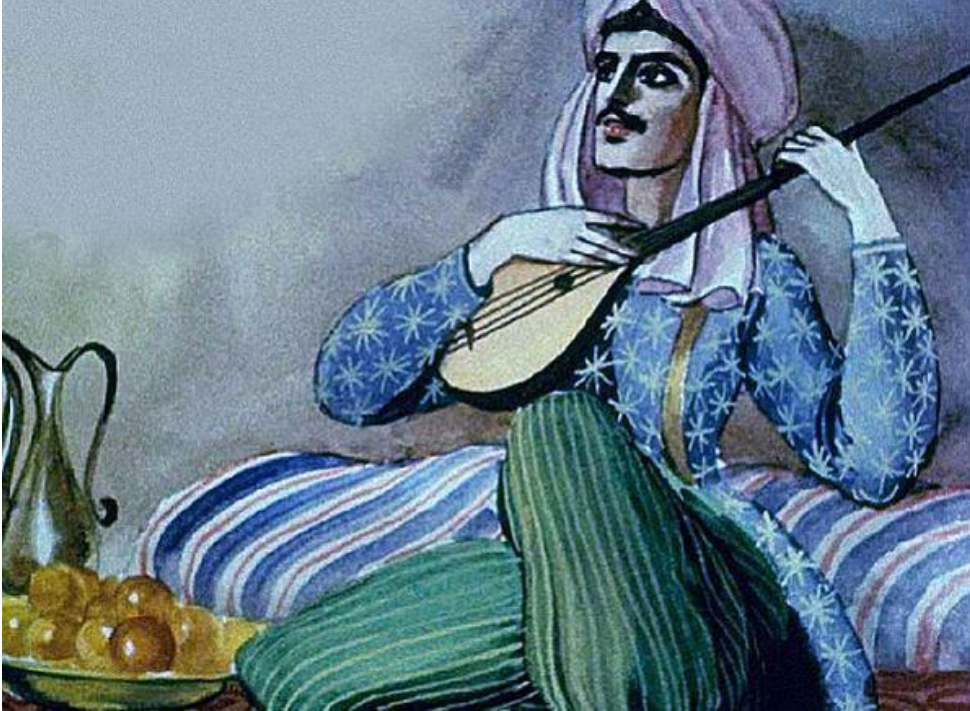
इसके बाद उसने अपना साज़ लिया और बजाना शुरू कर दिया:

"हलफ़ शहर में मैंने मिसिर की शराब पी, लेकिन भगवान ने मुझे पंख दिए और मैं एक ही दिन में यहाँ उड़कर आ गया."

कुर्शुद-बेक का भाई, जो एक मूर्ख व्यक्ति था, ने अपना खंजर निकाला और चिल्लाया:

"तुम झूठ बोल रहे हो. तुम एक दिन में तुम हलफ़ से यहाँ कैसे आ सकते हो?"

"तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो?" अशेक ने पूछा. “गायकों का दूर-दूर से एक जगह इकट्ठा होना एक आम बात है. और मैं तुमसे कुछ नहीं लूँगा, तुम चाहें मुझ पर विश्वास करो, या न करो."
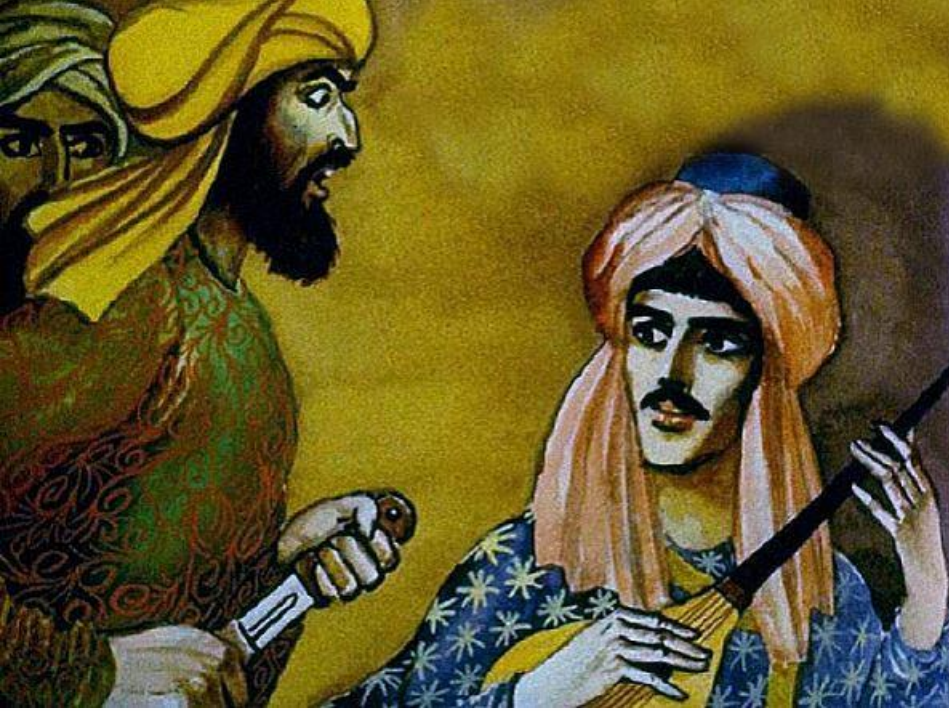
दूल्हे ने कहा, "उसे आगे गाने दो," और अशेक-केरीब ने फिर से अपना गाना शुरू कर दिया. “मैंने अपनी सुबह की प्रार्थना अरज़िनयान की घाटी में की, मेरी दोपहर की प्रार्थना अरज़ेरम शहर में की; सूरज डूबने से पहले मैंने कार्स शहर के सामने अपनी प्रार्थना की, और अपनी शाम की प्रार्थना तिफ़्लिस में की. अल्लाह ने मुझे पंख दिये, और मैं उड़कर यहाँ आ गया. भगवान ने मुझे एक सफेद घोड़े का उपहार दिया क्योंकि वह बहुत तेजी से सरपट दौड़ा, पहाड़ से खड्ड में और खड्ड से पहाड़ में: दुनिया के मालिक ने अशेक को पंख दिए, और तभी वह मगुल-मेगेरी की शादी में पहुँच पाया."

फिर मगुल-मेगेरी ने उसकी आवाज पहचानकर खंजर एक तरफ फेंका और जहर का प्याला दूसरी तरफ.

"तो इस तरह तुम अपनी शपथ निभाती हो," उसकी दोस्तों ने कहा. "इस तरह तुम इसी रात कुर्शुद-बेक की पत्नी बनोगी."

"तुम उसे नहीं जानती हो, लेकिन मैं अपने प्रिय की आवाज़ पहचानती हूँ," मगुल-मेगेरी ने उत्तर दिया और फिर कैंची लेकर, उसने पर्दा काट दिया.
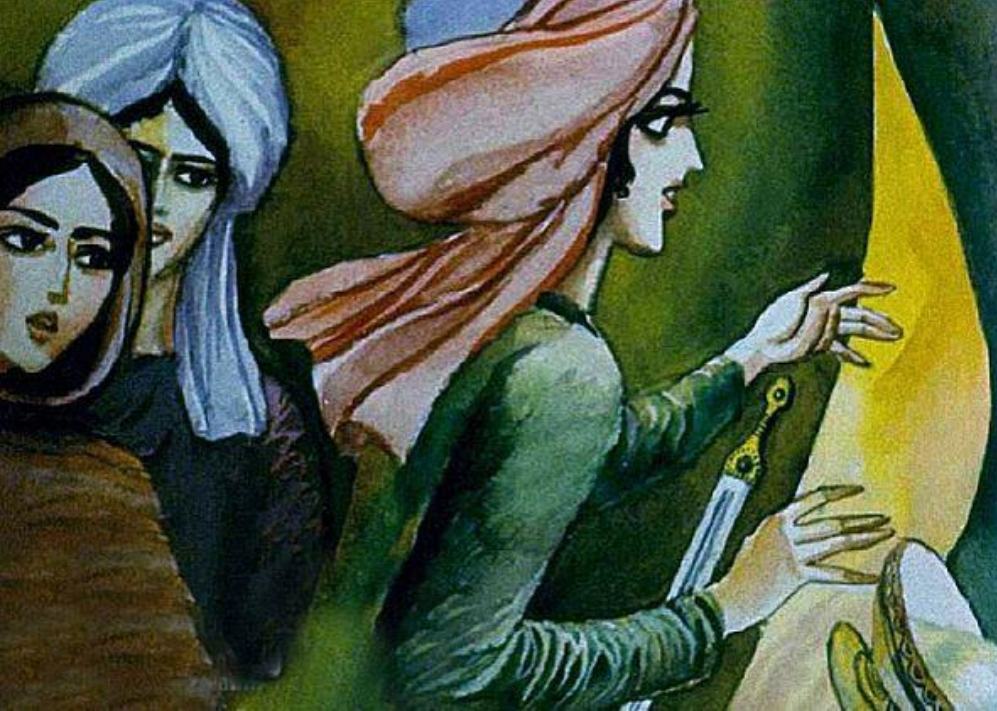
जब उसने झाँक कर देखा कि वह सचमुच में उसका अशेके-केरीब था, तो वह चिल्लाई, फिर उसने खुद को उसके ऊपर फेंक दिया और दोनों बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े.
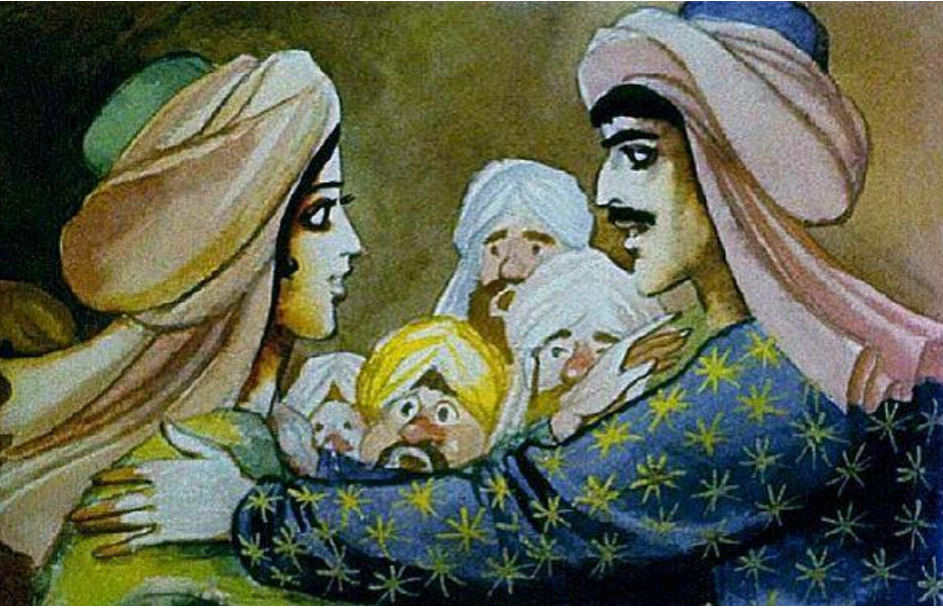
कुर्शुद-बेक का भाई उन दोनों को चाकू मारने के इरादे से चाकू लेकर उनकी ओर दौड़ा, लेकिन कुर्शुद-बेक ने उसे यह कहते हुए रोक दिया:

"अपने आप को शांत करो और जान लो कि जन्म के समय मनुष्य के माथे पर जो लिखा होता है उसे बाद में टाला नहीं जा सकता है."
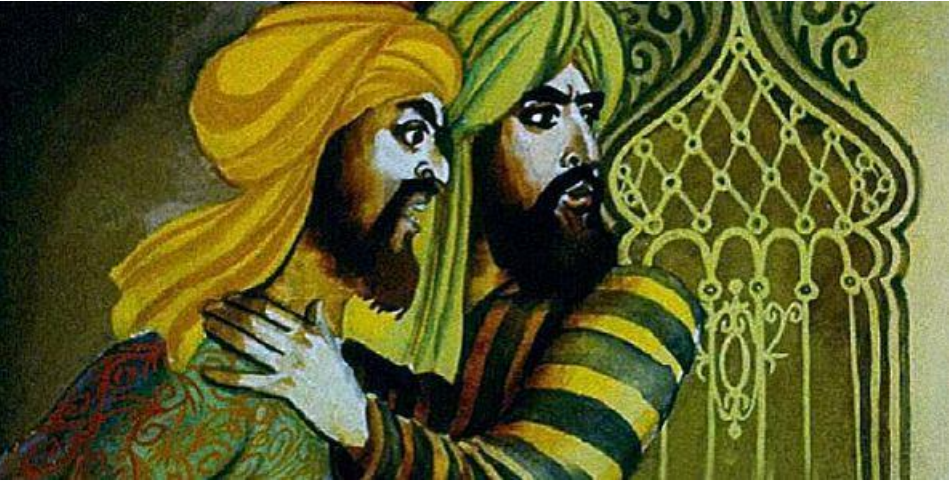
जब वह होश में आई, तो मगुल-मेगेरी शर्म से लाल हो गई, उसने अपना चेहरा अपने हाथों से ढक लिया और फिर से वह पर्दे के पीछे छिप गई.

"अब मैं अच्छी तरह से देख रहा हूं कि आप अशेके-केरीब हैं." दूल्हे ने कहा, "लेकिन हमें यह बताओ कि तुम इतने कम समय में इतनी लंबी दूरी तय करने में कैसे कामयाब रहे."

“मैं जो कहता हूं उसका सच साबित करने के लिए,” अशेक ने उत्तर दिया, “मेरी कृपाण पत्थर को काट देगी और अगर मैं झूठ बोलूंगा, तो मेरी गर्दन इतनी पतली हो जाएगी कि वह मेरे सिर को नहीं उठा सकेगी. परन्तु सबसे अच्छा यह होगा कि तुम किसी अन्धी स्त्री मेरे पास ले आओ जिसने सात साल से परमेश्वर का संसार नहीं देखा हो, और मैं उसकी दृष्टि लौटा दूँगा.”
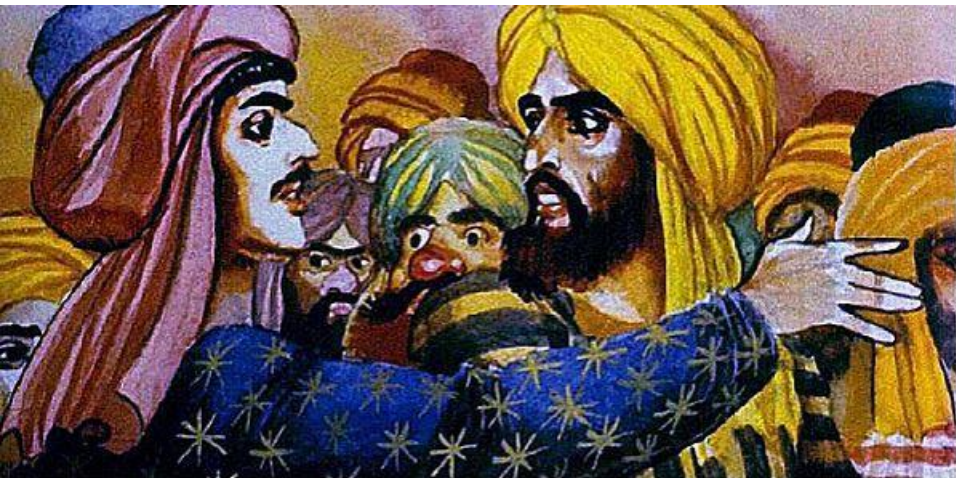
अशेक-केरीब की बहन, जो अभी भी दरवाजे पर खड़ी थी, ये शब्द सुनकर अपनी माँ को लाने के लिए दौड़ी.

"माँ!" वह चिल्लाई, "वह वास्तव में मेरा भाई और आपका बेटा अशेक-केरीब है," और, उसका हाथ पकड़कर, वह बुढ़िया को दावत में वापस लाई.
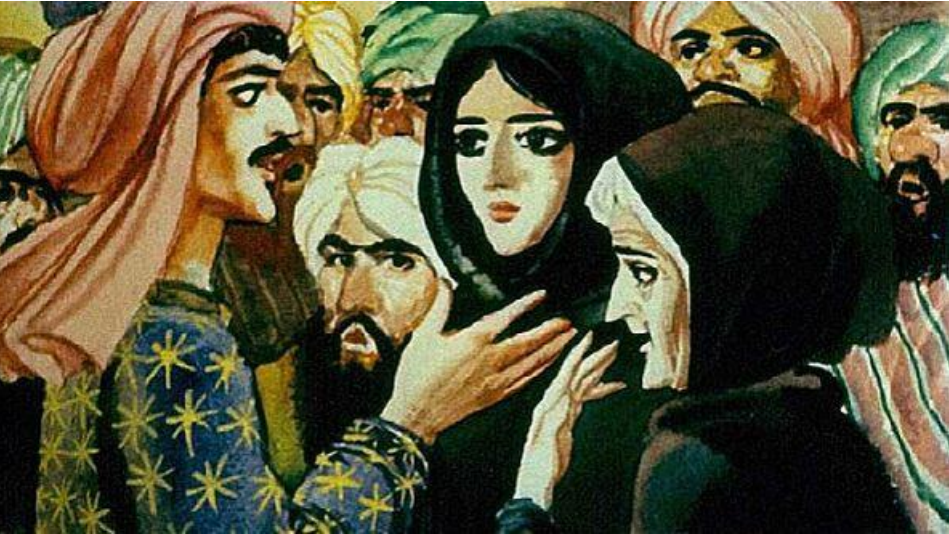
तब अशोक ने अपनी लबादे के अंदर से मिट्टी लेकर उसे पानी में मिलाई, और अपनी माता की आंखों पर लगाकर कहा:

"जान लो, तुम सब लोगों, हेडेरिलियाज़ कितना महान और शक्तिशाली है," और फिर उसकी माँ की आँखें खुल गईं और वो देखने लगीं.
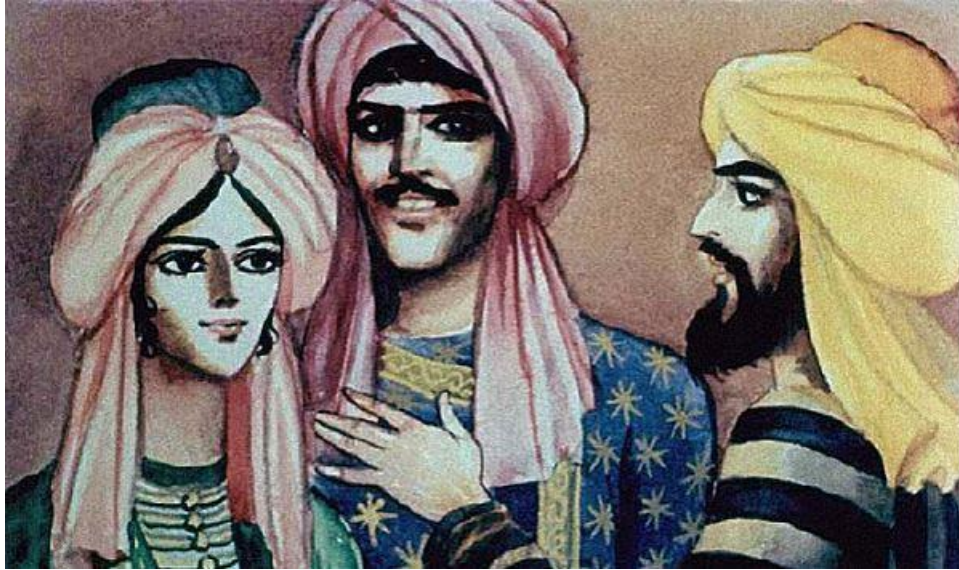
उसके बाद किसी ने भी उसके शब्दों की सच्चाई पर संदेह करने की हिम्मत नहीं की, और कुर्शुद-बेक ने बिना एक शब्द कहे सुंदर मगुल-मेगेरी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया.
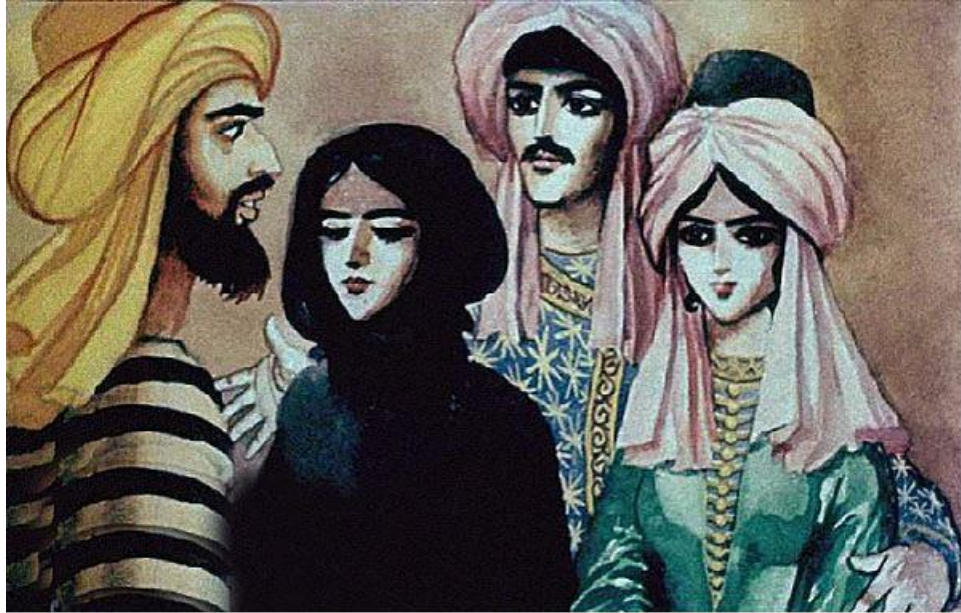
तब खुशी में अशेक-केरीब ने उससे कहा: "सुनो, कुर्शुद-बेक, मैं तुम्हें एक उपहार दूंगा. मेरी बहन तुम्हारी पिछली दुल्हन से कम सुन्दर नहीं है और मैं अमीर हूँ. उसके पास चाँदी और सोना भी कम न होगा. इसलिए तुम उसे अपने लिए ले लो, और उसके साथ उतने ही खुश रहो जितना मैं अपनी प्यारी मगुल-मेगेरी के साथ रहूँगा.